मुझे भी शामिल कीजिए!

विजया महादेवन

अकादमिक सत्र समाप्त होने को है और बच्चे अपनी बोर्ड की परीक्षा की तैयारियों में जुटे हुए हैं। परीक्षा के कारण वे थोड़े तनावग्रस्त भी हैं। मैं इस बात की बेतहाशा कोशिश कर रही हूँ कि कक्षा को जीवन्त और खुशगवार बनाया जाए। आमतौर पर मेरी कक्षा में प्रमस्तिष्क घात (cerebral palsy) से पीड़ित दो छात्र, एक दृष्टिहीन छात्र, बहु असमर्थताओं और अवाचिकता (non-verbal) से पीड़ित एक छात्र; बौद्धिक रूप से असमर्थ दो छात्र, *अधिगम की असमर्थता* वाले दो विद्यार्थी और सामान्य बुद्धि वाले तीन विद्यार्थी होते हैं, जो आर्थिक और पारिवारिक समस्याओं के कारण स्कूल छोड़ चुके होते हैं। मैं चाहती हूँ कि मैं अँग्रेजी में वार्तालाप और प्रभावी सम्प्रेषण सिखाने वाली अपनी कक्षा को एक बढ़िया तरीके के साथ समाप्त करूँ। इसके लिए मैं उन्हें उनके बिजनेस स्टडीज की पाठ्यचर्या पर एक प्रोजेक्ट करके उसे कक्षा के सामने प्रस्तुत करने को कहती हूँ। मैं उनके समूह बनाती हूँ और तभी जे पूछता है,"मैडम, एम कैसे भाग लेगा? वह तो बोल नहीं सकता।" इससे पहले कि मैं इसका जवाब सोचती, व्हील चेयर पर बैठे हुए टी ने अपने अवाचिक मित्र के बचाव में तपाक से जवाब दिया,"तो क्या हुआ? जानकारियों और चित्रों को डाउनलोड करके पॉवर पॉइंट प्रस्तुति बनाने में एम बहुत अच्छा है। उन स्लाइडों की व्याख्या हम कर देंगे।" और यूँ एक मिनट में समस्या हल हो गई! एम के चेहरे पर चमक और चिरपरिचित मुस्कान आ जाती है मानो कह रहा हो," मुझे शामिल करने के लिए ''धन्यवाद"।

मेरे सहयोगी और मैं आश्चर्यचकित हो जाते हैं, क्या यही असली समावेशन है? क्या यह इतना आसान है?

समावेशन एक भव्य और मायावी अवधारणा प्रतीत होती है। समावेशन की कोई स्वीकृत परिभाषा लोकप्रिय नहीं हुई है जिससे जाहिर होता है कि इसकी प्रकृति जटिल और विवादपूर्ण है। *समावेशी शिक्षा* इन दोनों बातों पर ध्यान देती है– पहला विद्यार्थियों का अधिकार और दूसरा शिक्षार्थियों के विभिन्न समूहों की जरूरतों को पूरा करने के लिए शिक्षा प्रणाली को कैसे तब्दील किया जा सकता है। ऐतिहासिक सालामेंका घोषणा के अनुसार, "आदर्श रूप में देखें तो समावेशी शिक्षा, सीखने के माहौल में आने वाले अवरोधों को कम करके सभी शिक्षार्थियों की विविध जरूरतों को सम्बोधित करने और उन्हें पूरा करने की प्रक्रिया है।" श्रीमती रुक्मिणी कृष्णस्वामी, निदेशक, स्पास्टिक सोसायटी ऑफ कर्नाटक (एस.एस.के.), जब भी समावेशी शिक्षा के बारे में शिक्षकों और विशेष शिक्षकों को सम्बोधित करती हैं तो बड़ी खूबसूरती के साथ अपनी बात कहती हैं। वे कहती हैं," हर कक्षा के दरवाजे के पीछे विविधता से भरी एक दुनिया है। जब विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी भी उस कक्षा के सदस्य बन जाते हैं तो विविधता और भी बढ़ जाती है, उनके अधिगम की जरूरतें अधिक गम्भीर और सशक्त हो सकती हैं जिससे शिक्षकों के सामने एक बड़ी चुनौती आकर खड़ी हो जाती है।" एस. एस.के. में हम विशेष रूप से ऐसे बच्चों का समावेशन करना चाहते हैं जो 6 से 14 आयु वर्ग के हैं और जिन्होंने स्कूल छोड़ दिया है या जिन्हें स्कूल से निकाल दिया गया है; विशेष जरूरतों वाले बच्चे और शिशु तथा सामाजिक–आर्थिक रूप से वंचित समूह जैसे अल्पसंख्यक, आदिवासी और अप्रवासी समूह के बच्चे।

Spastics Society of Karnataka

हालाँकि हम यह मानते हैं कि सभी विद्यार्थियों को सामान्य शिक्षा की प्रक्रिया में भाग लेना चाहिए लेकिन कोई भी कार्यक्रम या व्यवस्था सभी विद्यार्थियों की जरूरतों को पूरा नहीं कर सकती। जब हम 'असमर्थता' शब्द को सुनते हैं तो लगता है कि शारीरिक समस्याओं के बारे में बात हो रही है। शारीरिक, दृष्टि और श्रवण–सम्बन्धी असमर्थताएँ इतनी आम बातें नहीं हैं। जो असमर्थताएँ अक्सर देखने में आती हैं वे हैं–अधिगम अशक्तता, वाचिक व भाषा असमर्थता, व्यवहार विकार और मानसिक मन्दता। हमारा मानना तो यह है कि समावेशन से सभी विद्यार्थियों को लाभ होता है, उनमें कोई असमर्थता हो या न हो। कक्षा में समावेशन से सहिष्णुता, धैर्य और विविधता का मोल समझने की भावना सिखाई जा सकती है और इस प्रकार बड़े होने पर समावेशी समाज में जीवन–यापन करने के लिए विद्यार्थियों को तैयार किया जा सकता है।

यही कारण है कि कर्नाटक स्पास्टिक सोसायटी एक वट वृक्ष की तरह अपने कार्य में लगी हुई है जिसकी अनेक शाखाएँ हैं और जिसकी जड़ें मजबूती के साथ जमी हुई हैं। एस.एस.के., तन्त्रिकापेशीय और विकासात्मक असमर्थता से पीड़ित बच्चों के लिए नैदानिक और पुनर्वासन सम्बन्धी सेवाएँ प्रदान करती है और प्रमस्तिष्क घात, मानसिक मन्दता, स्वलीनता वर्णक्रम विकार, बहु असमर्थता और अधिगम असमर्थताओं पर विशेष रूप से ध्यान देती है। एस.एस.के. का फोकस इन बातों पर है–स्वतंत्रता और स्वयं की देखभाल करना, सम्प्रेषण, जीवन कौशल सम्बन्धी प्रशिक्षण; आवश्यकता के अनुसार शिक्षण देना और सबसे बड़ी बात यह कि बच्चों में दुनिया का सामना करने का आत्मविश्वास पैदा करना। वैसे तो यहाँ पूरक शिक्षण सामग्री की सहायता से बच्चे की क्षमता के अनुसार पाठ्यक्रम पर आधारित शिक्षा दी जाती है लेकिन साथ ही कई संवर्धन पूर्ण गतिविधियाँ भी करवाई जाती हैं जैसे संगीत, कला और क्राफ्ट तथा खेलकूद आदि।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (एन.आई.ओ.एस.) धन्यवाद का पात्र है क्योंकि इसके समावेशी शिक्षा कार्यक्रम के कारण अब ऐसे बच्चे भी शिक्षा पा सकते हैं जो आर्थिक रूप से वंचित समूह के हैं और जो मुख्यधारा के स्कूल छोड़ चुके हैं। इस योजना के तहत कई विद्यार्थियों ने माध्यमिक और सीनियर माध्यमिक कोर्स पूरे कर लिए हैं और वे बेंगलूरु के मुख्य धारा के कॉलेजों जैसे क्राइस्ट कॉलेज, ज्योति निवास कॉलेज, जैन यूनिवर्सिटी और

The SSK team

गुडविल महिला कॉलेज में स्नातक स्तर की पढ़ाई करने में सफल रहे हैं। उपर्युक्त कॉलेजों ने एस.एस.के. की बहु–अनुशासनात्मक टीम को यह अवसर प्रदान किया कि वे स्टाफ और विद्यार्थियों को असमर्थता के बारे में सम्बोधित करें ताकि युवा पीढ़ी संवेदनशील बन सके और हमारे विशेष विद्यार्थी समुदाय के साथ जुड़ने में सशक्त बन सकें। हमारा एक ऐसा ही विशेष विद्यार्थी सम्प्रेषण में स्नातक स्तर की पढ़ाई कर रहा है; उसका कहना है कि "कॉलेज के पहले दिन मैं बहुत उत्साहित था। मैंने एक नई दुनिया में कदम रखा था, एक ऐसी दुनिया जहाँ मुख्यधारा के स्कूलों से विद्यार्थी कोर्स करने के लिए आए हुए थे, और मैं उनमें से एक था! मुझे यह कहने में बड़ा गर्व होता है कि मुझे जो आत्मविश्वास एस.एस.के. से मिला, उसकी वजह से मुझे इस स्तर तक पहुँचने में बहुत मदद मिली।" पिछले सालों में हमने कई ऐसे प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को देखा है जो हमारे समाज में असमर्थता की जागरूकता जगाने वाले ब्रांड एंबेसडर बन गए हैं। और हाँ, हम विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की क्षमता को अधिक से अधिक बढ़ाने की कोशिश में लगे हुए हैं और इसके लिए हम दैनिक जीवन के सभी पहलुओं में *"समावेशन"* लाने के कार्य में निरन्तर बड़ी जागरूकता और निष्ठा के साथ लगे हुए हैं।

एस.एस.के. में इतने वर्षों तक काम करने के दौरान हमने महसूस किया है कि समावेशी कक्षा और उसमें शिक्षण के प्रभावी तरीकों के लिए यह बहुत जरूरी है कि शिक्षक इन अन्तरों को समझें। यह उनके कौशल पर निर्भर करता है कि वे हर शिक्षार्थी को पाठ्यचर्या का ज्ञान कैसे कराते हैं। शोध संकेतित करते हैं कि कई शिक्षक यह महसूस करते हैं कि वे समावेशी कक्षाओं को पढ़ाने के लिए भली प्रकार से तैयार नहीं हैं और उनमें इस विश्वास की भी कमी होती

है कि वे समावेशी वातावरण में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को पढ़ाने के लिए सक्षम हैं। कई शिक्षक गम्भीर असमर्थताओं वाले बच्चों की तुलना में कम असमर्थ बच्चों को शामिल करने के लिए तैयार रहते हैं क्योंकि इससे उनके पूरी कक्षा को पढ़ाने के समग्र लक्ष्य को पाने में कम बाधा पड़ती है। जब कोई स्कूल अधिक समावेशी बनना चाहता है तब कुछ सम्भावित बाधाओं को भी पार करना पड़ता है जैसे मौजूदा नजरिया और मूल्य, समझ की कमी, अपेक्षित कौशलों की कमी और सीमित संसाधन। शिक्षकों को व्यवस्थित और गहन प्रशिक्षण की जरूरत है तथा उन्हें अविरत शिक्षा भी मिलनी चाहिए। कक्षा–कक्ष में सहायता करने के लिए अतिरिक्त स्टाफ, पाठ्यक्रम के पर्याप्त संसाधन और असमर्थता की जरूरतों को पूरा करने वाले उपकरणों का होना भी जरूरी है।

हर परिवार अपने बच्चों के बारे में दूसरों से बेहतर जानता है और अपने बच्चों के अधिगम में उसे सबसे ज्यादा रुचि होती है, इसलिए बच्चों के पूरे स्कूली जीवन की शिक्षा में परिवार को लगातार शामिल करते रहना चाहिए। हो सकता है कि ऐसी स्थितियाँ सामने आएँ जब माता–पिता और बच्चे की इच्छा में तालमेल न हो। उदाहरण के लिए माता–पिता अपने बच्चों के लिए मुख्यधारा वाली कक्षा पसन्द कर सकते हैं, लेकिन हो सकता है कि वे बच्चे अलग तरह का वातावरण या सेटिंग पसन्द करें क्योंकि उनके लिए ऐसे साथियों के साथ अन्तःक्रिया करना महत्त्वपूर्ण होता है जो उनकी समस्या समझते हैं। यह भी हो सकता है कि विद्यार्थी यह बात पसन्द न करें कि वे स्कूल में उनकी स्थिति एक विशेष बच्चे की है या उनमें कोई असमर्थता है। जब हम इन बातों को सन्तुलित करने का प्रयास करते हैं तो टकराव पैदा हो सकता है। विविधता का ठीक तरह से सामना करने के लिए, उससे निपटने के लिए बेहतर तरीकों की खोज को कभी खत्म न होने वाली प्रक्रिया मानना चाहिए। हमें यह सीखना है कि विविधताओं के साथ कैसे जिया जाए और इन विविधताओं से कैसे सीखा जाए।

पेशेवरों के बीच भूमिका सम्बन्धी स्पष्ट सम्बन्ध, सहायक स्टाफ का प्रभावी उपयोग और प्रभावशीलता के मूल्यांकन के लिए सार्थक व्यक्तिगत शिक्षा योजनाओं की प्रणाली (Individual Education Plans - IEPs) आज की आवश्यकताएँ हैं। पाठ्यचर्या अभिगम के लिए शिक्षा में एक साधन के रूप में सहायक तकनीकी का प्रयोग हाल ही में विकसित दृष्टिकोण है जो तेजी से बढ़ रहा है। तकनीकी के क्षेत्र में निरन्तर हो रही प्रगति से समावेशी कक्षा में इसके अनुप्रयोग का विस्तार करने में मदद मिलेगी।

अन्त में, जब हम समावेशी शिक्षा की बात करते हैं तो उसमें समाज की भूमिका को कम नहीं माना जा सकता। समावेशन की प्रक्रिया के साथ जुड़ने और संवाद करने के लिए एस.एस.के. समुदायों, निगमों और गैर लाभकारी संस्थाओं के साथ काम करती है। अगर इस बात को मान्यता दिलवानी है कि शिक्षा के क्षेत्र में समावेशन समाज में समावेशन का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है तो एक तरफ तो हमें संस्कृतियों, पाठ्यचर्या और समुदायों में विद्यार्थियों के बहिष्करण को कम करना होगा, स्कूल के भीतर और बाहर नीतियों एवं कार्यविधियों का पुनर्गठन करना होगा ताकि वे अपने इलाके में विद्यार्थियों की विविधता को समझ सकें तथा दूसरी तरफ इन सब कार्यों में विद्यार्थियों की भागीदारी बढ़ानी होगी।

विजया महादेवन ने 20 वर्षों तक मुख्यधारा के स्कूलों में एक शिक्षिका के रूप में काम करने के बाद 2006 से कर्नाटक स्पास्टिक सोसायटी में अध्यापन शुरू किया। यहाँ पर वे माध्यमिक और सीनियर माध्यमिक कक्षाओं में शिक्षण करती हैं और मुक्त विद्यालयी शिक्षा पर विशेष ध्यान देती हैं। वे एस.एस.के. की निदेशक श्रीमती रुक्मिणी कृष्णस्वामी, एच.आर.डी.टी. की विभागाध्यक्षा डॉ. हेमा कृष्णमूर्ति, लर्नर्स सेण्टर की प्राचार्या कैराली नायर और एस.एस.के. के अन्य सहयोगियों के इनपुटों के लिए उनका आभार प्रकट करती हैं और उन्हें धन्यवाद देती हैं। उनसे vijaya.mahadevan@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। एस.एस.के. पर अधिक जानकारी के लिए http://www.spasticssocietyofkarnataka.org/ पर सम्पर्क करें। **अनुवाद** : नलिनी रावल